



e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2320-6710

# IJRSET

International Journal of Innovative Research in  
**SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY**

# INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 12, December 2022

**ISSN** INTERNATIONAL  
STANDARD  
SERIAL  
NUMBER  
INDIA

**Impact Factor: 8.118**

9940 572 462

6381 907 438

[ijirset@gmail.com](mailto:ijirset@gmail.com)

[www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

## राजस्थान के अरावली प्रदेश में पौधों की विविधता

Dr. Anita

Assistant Professor, Dept. of Botany, R.K.J.K. Barasia P.G. College, Surajgarh,  
Jhunjhunu, Rajasthan, India

सार

अरावली भारत के पश्चिमी भाग राजस्थान में स्थित एक पर्वतमाला है। जिसे राजस्थान में आडावाला पर्वत के नाम से भी जाना जाता है, भारत की भौगोलिक संरचना में अरावली प्राचीनतम पर्वत श्रेणी है, जो गोडवाना लैंड का अस्तित्व है।<sup>[1]</sup> यह संसार की सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखला है जो राजस्थान को उत्तर से दक्षिण दो भागों में बांटती है। इसकी उत्पत्ति प्रिकैम्ब्रियन युग (45000 लाख वर्ष ) में हुई। अरावली का सर्वोच्च पर्वत शिखर सिरौही जिले में गुरुशिखर (1722 /1727 मी.) है, जो माउंट आबू(सिरौही) में है। जो राजस्थान की सबसे ऊंची चोटी है। अरावली पर्वतमाला के आस - पास सदियों से भील जनजाति निवास करती रही है। डोरा पर्वत की ऊँचाई 868m

अरावली पर्वत श्रृंखला की अनुमानित आयु 570 मिलियन वर्ष है यह एक अवशिष्ट पर्वत का उदाहरण है जिसकी कुल लम्बाई गुजरात से दिल्ली तक लगभग 692 किलोमीटर है, अरावली पर्वत श्रृंखला का लगभग 79.49% विस्तार राजस्थान में है, दिल्ली में स्थित राष्ट्रपति भवन रायसीना की पहाड़ी पर बना हुआ है जो अरावली पर्वत श्रृंखला का ही भाग है, अरावली की औसत ऊँचाई 930मीटर(एनसीआरटी के अनुसार 1000 मीटर) है, तथा अरावली के दक्षिण की ऊँचाई व चौड़ाई सर्वाधिक है, अरावली या अर्वली उत्तर भारतीय पर्वतमाला है। राजस्थान राज्य के पूर्वोत्तर क्षेत्र से गुज़रती 550 किलोमीटर लम्बी इस पर्वतमाला की कुछ चट्टानी पहाड़ियाँ दिल्ली के दक्षिण हिस्से तक चली गई हैं। शिखरों एवं कटकों की श्रृंखलाएँ, जिनका फैलाव 10 से 100 किलोमीटर है, सामान्यतः 300 से 900 मीटर ऊँची हैं। यह पर्वतमाला, दो भागों में विभाजित है- सांभर-सिरौही पर्वतमाला- जिसमें माउण्ट आबू के गुरु शिखर (अरावली पर्वतमाला का शिखर, ऊँचाई (1,722 मीटर) में और (5649.606 फ़ीट) सहित अधिकतर ऊँचे पर्वत हैं। सांभर-खेतरी पर्वतमाला- जिसमें तीन विच्छिन्न कटकीय क्षेत्र आते हैं। अरावली पर्वतमाला प्राकृतिक संसाधनों (एवं खनिज़) से परिपूर्ण है और पश्चिमी मरुस्थल के विस्तार को रोकने का कार्य करती है। अरावली पर्वत का पश्चिमी भाग मारवाड़ एवं पूर्वी भाग मेवाड़ कहलाता है। यहां अनेक प्रमुख नदियों- बनास, लूनी, साखी एवं साबरमती का उदगम स्थल है। इस पर्वतमाला में केवल दक्षिणी क्षेत्र में सघन वन हैं, अन्यथा अधिकांश क्षेत्रों में यह विरल, रेतीली एवं पथरीली हैं।

परिचय

अरावली राजस्थान की मुख्य पर्वत श्रृंखला है जो छोटे और मध्य आकर के वृक्षों से आच्छादित है, इन वृक्षों में विविधता तो है परन्तु कुछ वृक्षों ने मानो पूरी अरावली में बहुतायत में मिलते हैं जिनमें सबसे महत्वपूर्ण वृक्षों का विवरण यहाँ दिया गया है।<sup>[1]</sup>



1. धोक (*Anogeissus pendula*) :- यदि रेगिस्तान में खेजड़ी हैं तो, अरावली के क्षेत्र में धोक सबसे अधि० 8क संख्या में मिलने वाला वृक्ष हैं। कहते हैं लगभग 80 प्रतिशत अरावली इन्ही वृक्षों से ढकी हैं। अरावली का यह वृक्ष नहीं बल्कि उसके वस्त्र हैं जो समय के साथ उसका रंग बदलते रहते हैं। सर्दियों में इनकी पत्तिया ताम्बई लाल, गर्मियों में इनकी सुखी शाखाये धूसर और बारिश में पत्ते जैसे हरी दिखने लगती हैं। अरावली के वन्य जीवों के लिए यदि सबसे अधिक पौष्टिक चारा कोई पेड़ देता हैं तो वह यह हैं। इनके उत्तम चारे की गुणवत्ता के कारण लोग अक्सर इन्हे नुकसान भी पहुंचाते रहते हैं। इनकी कटाई होने के बाद इनका आकर एक बोन्साई के समान बन जाता हैं,





### **Anogeissus pendula**

एवं पुनः पेड़ बनना आसान नहीं होता क्योंकि अक्सर इन्हे बारम्बार कोई पालतू पशु चरते रहते हैं, और इनके बोन्साई आकार को बरकरार रखते हैं। यदि खेजड़ी राजस्थान का राज्य वृक्ष नहीं होता तो शायद धोक को यह दर्जा मिलता।

### 2. तेन्दु एवं विषतेन्दु (*Diospyros Melanoxylon*) and (*Diospyros cordifolia*) :- बीड़ी जलाईल ले ...



जिगर मा बड़ी आग है

### *Diospyros Melanoxylon*

बस हर साल इस जिगर की आग को बुझाने के लिए हम बीड़ी के रूप में 3 से 4 लाख टन तेंदू के पत्ते जला देते हैं। तेन्दु का उपयोग बीड़ी के उत्पादन के लिए किया जाता है। देश में इनका अत्यधिक उत्पादन होना, उम्दा स्वाद होना, पत्ते का लचीलापन, काफी समय तक आसानी से नष्ट नहीं होना और आग को बनाए रखने की क्षमता के कारण तेन्दु की पतियों को बीड़ी बनाने के लिए काम लिया जाता है। जाने कितने लोग बीड़ी बनाने और पत्ते

तोड़ने के व्यापार में शामिल है। स्थानीय समुदायों को यह जीवनयापन के लिए एक छोटी कमाई भी देता है। तेंदू चीकू (सपोटा) परिवार से संबंधित है और वे स्वाद में भी कमोबेश इसी तरह के होते हैं। तेन्दु या टिमरू के फल को खाने का सौभाग्य केवल भालु, स्थानीय समुदाय और वन रक्षकों को ही मिलता है। तेंदू के पेड़ का एक और भाई है- जिसे विषतेन्दु (डायोस्पायरस कॉर्डिफोलिया) कहा जाता है, जिसके फल मनुष्यों के लिए खाने योग्य नहीं बल्कि बहुत ही कड़वे होते हैं, लेकिन कई जानवर जैसे कि सिवेट इन्हें नियमित रूप से खाते हैं। विषतेन्दु वृक्ष एक छोटी हरी छतरी की तरह होता है और चूंकि यह पतझड़ी वन में एक सदाबहार पेड़ है, बाघों को इनके नीचे आराम करना बहुत पसंद है। आदित्य सिंह हमेशा कहते हैं कि अगर आप गर्मियों में बाघों को खोजना चाहते हैं तो विषतेन्दु के पेड़ के निचे अवस्य खोज करें।



*Diospyros cordifolia*

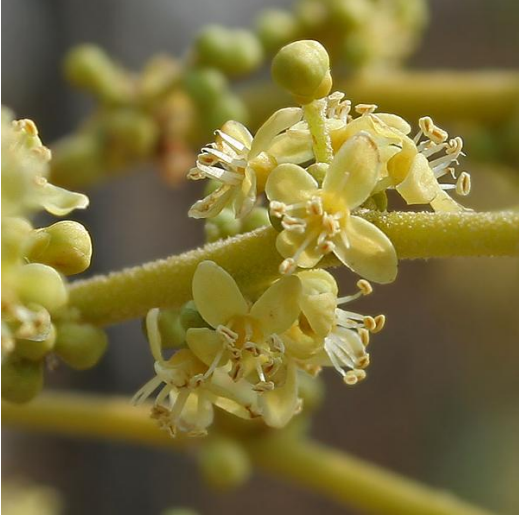
3. कडाया (*Sterculia urens*):-इसे स्थानीय रूप से कतीरा, कडाया (कतीरा या कडाया गोंद के लिए प्रसिद्ध) कहा जाता है, लेकिन सबसे लोकप्रिय नाम है 'घोस्ट टी' है क्योंकि जब वे अपने पत्तों को गिराते देते हैं तो इसके सफेद तने एक मानव आकृति का आभास देते हैं।



### *Sterculia urens*

मेरे वनस्पति विज्ञान के एक प्रोफेसर ने इसे एक प्रहरी वृक्ष के रूप में वर्णित किया है क्योंकि यह आमतौर पर पहाड़ों के किनारे उगने वाला यह पेड़, किलों की बाहरी दीवार पर खड़े प्रहरी (गार्ड) की तरह दिखता है। यह के पर्णपाती पेड़ है और सभी पर्णपाती पेड़ जल संसाधनों का उपयोग बहुत मितव्ययीता से करते हैं लेकिन इनके पत्तों का आकार विशाल होता है और उनके उत्पादन में कोई कमी नहीं होती। अरावली पहाड़ियों में कतीरा पेड़ के संभवतः सबसे बड़ा पत्ता होते हैं; उनकी पत्तियाँ बहुत नाजुक और पतली होती हैं और वे पूरे वर्ष के लिए कुछ महीनों में पर्याप्त भोजन बनाने में सक्षम भी होती हैं। यह पर्णपाती पेड़ों की एक रणनीति का हिस्सा है कि उनके पास हरे पेड़ों की तुलना में बड़े आकार के पत्ते हैं, जो यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रकाश संश्लेषण की दर और प्रभावशीलता अपेक्षाकृत अधिक रहे। कतीरा का विशिष्ट सफेद चमकता तना चिलचिलाती धूप को प्रतिबिंबित कर देता है और यह भी पानी के नुकसान को कम करने के लिए एक और अनुकूलन है। [2,3] अधिकांश पर्णपाती पेड़ों पर फूलों की उत्पत्ति उस समय होती है जब वे सरे पत्ते झाड़ा देते हैं, उस समय के दौरान परागण की संभावना बढ़ जाती है। घनी पत्तियाँ से होने वाली रुकावटों के कारण परागण में बाधा होती है। कुछ मकड़ियों ने पश्चिमी घाट में कीड़ों का शिकार करने के लिए अपने आप को इस पेड़ के साथ अनुकूलित किया है। कतीरा के पेड़ पर कुछ मकड़ियों को आसानी से देखा जा सकता है जैसे कि फूलों पर प्यूसेटिया विरिडान और उनकी तने पर पर हर्नेनिया मल्टीफंक्टा। मानव आवासों के नजदीक, हम तेजी से उन्हें विदेशी सदाबहार पेड़ पौधे लगा रहे हैं जो जैव विविधता के साथ जल संरक्षण के लिए भी हानिकारक है।

4. गुरजण (*Lannea coromandelica*):- वृक्ष पक्षियों के बड़े समूहों के लिए पसंदीदा बसेरा है, पत्तों से लदे वृक्ष के बजाय पक्षी इस पर्ण रहित पेड़ की शाखाओं पर बैठना अधिक पसंद करते हैं, जहां से वह अपने शिकारियों पर निगरानी रख सके उत्तर भारत के सूखे मौसम में गुरजण में वर्षा ऋतू के कुछ दिनों बाद ही पत्ते झड़ने लगते हैं। यह पूरे वर्ष में आठ माह बिना पत्तियों के गुजरता है। इसकी प्रजाति का नाम कोरोमंडलिका है जो कोरोमंडल (चोला मंडल साम्राज्य) से आया है। यह जंगलों में स्थित प्राचीन भवनो और इमारतों में उगना पसंद करते हैं।



*Lannea coromandelica*

6. कठफडी ( *Ficus mollis* ):- एक सदाभारी पेड़ हैं, जो पत्थरो और खड़ी चट्टानों को पसंद करता हैं। इनकी लम्बी जड़े चट्टानों को जकड़े रखती हैं जो अरावली और विंध्य पहाड़ियों की सुंदरता को बढ़ाती हैं। इसीलिए इस तरह के पेड़ो को लिथोफिटिक कहते हैं। यह बाज और अन्य शिकारी पक्षियों को उंचाई



पर घोंसले बनाने लायक सुरक्षित स्थान प्रदान करता हैं।

*Ficus mollis*

स्थानीय लोग मानते हैं यदि इसके पत्ते भैंस को खिलाया जाये तो उसका दुग्ध उत्पादन बढ़ जाता हैं।

7. ढाक / छिला / पलाश ( *Butea monosperma* ) :- दोपहर की राग भीम पलाशी हो या अंग्रेजो के साथ हुआ बंगाल का प्रसिद्ध पलाशी का युद्ध इन सबका सीधा सम्बन्ध सीधा सम्बन्ध इस पेड़ से रहा हैं- जिसे स्थानीय भाषा में पलाश कहते हैं। जब इनके पुष्प एक साथ इन पेड़ो पर आते हैं, तो लगता हैं मानो जंगल में आग लग गयी हो



अतः इन्हे फ्लेम ऑफ़ थे फारेस्ट भी कहते हैं। इनके चौड़े पत्ते थोड़े बहुत सागवान से मिलते हैं अतः ब्रिटिश ऑफिसर्स ने नाम दिया 'बास्टर्ड टीक' जो इस शानदार पेड़ के लिए एक बेहूदा नाम है। वनों के नजदीक रहनेवाले लोग अपने पशुओं के लिए इनसे अपने झोंपड़े भी बना लेते हैं।[4,5]



*Butea monosperma*

8. झाड़ी (*Ziziphus nummularia*) :-सिक्को के समान गोल-गोल पत्ते होने के कारण झाड़ी को वैज्ञानिक नाम *Ziziphus nummularia* है। यद्यपि यह राजस्थान में झाड़ी नाम से ही प्रसिद्ध है। एक से दो मीटर ऊंचाई तक की यह कटीली झाड़िया बकरी, भेड़ आदि के लिए उपयोगी चारा उपलब्ध कराता है। लोग इनके ऊपरी भाग को काट लेते हैं एवं सूखने पर पत्तों को चारे के लिए अलग एवं कटीली शाखाओं को अलग करके उन्हें बाड़ बनाने काम लिया जाता है। झाड़ियों में लोमड़िया, सियार, भालू, पक्षी आदि के लिए स्वादिष्ट फल लगते हैं एवं इनकी गहरी जड़ों से स्थिर हुई मिट्टी के निचे कई प्राणी अपनी मांद बनाके रहते हैं। बच्चे भी इनके फल के लिए हमेशा लालायित रहते हैं।





*Ziziphus nummularia*

### विचार-विमर्श

सबसे पुरानी अरावली पर्वत श्रृंखला जल्द ही लोगों के लिए संजीवनी बूटी का काम करने वाली है।



Aravalli ranges (oldest)

हरियाणा के मुख्यमंत्री ने बुधवार देर शाम ट्वीट करके कहा है कि पूरे अरावली पर्वत श्रृंखला में बाबा रामदेव के सहयोगी आचार्य बालकृष्ण के सहयोग से औषधीय पौधों की उन्नत नस्ल लगाई जाएगी। ताकि अरावली की को बचाया जा सके। मुख्यमंत्री के इस ट्वीट से एनवायरमेंट लवर काफी खुश हैं। शहर की सेव अरावली संस्था ने सीएम के इस फैसले का खुल कर स्वागत किया है। वन विभाग के प्रयास सफलवन विभाग की ओर से अरावली

पर्वत श्रृंखला में हर बार मानसून से पूर्व बीजों का या तो छिड़काव कराया जाता है, या फिर कच्ची जगहों पर पौधारोपण किया जाता है। इस बार विभाग की ओर से टेंच विधि से पहाड़ी क्षेत्र में बीजरोपण किया गया। इस दौरान नालीनुमा दरारें पहाड़ में बनाई गईं और उनमें बीजों को डाला गया। उम्मीद यही थी कि वर्षा आएगी तो दरारों में पानी भरेगा, जिससे पौधों को लंबे समय तक खुराक मिलेगी और पौधे जलेंगे भी नहीं। इस बार मानसून के दौरान कम वर्षा हुई जिससे लगने लगा था कि अरावली में पौधों को खासा नुकसान होने वाला है।



अरावली विविधता-जैव पार्क, गुड़गांव, (या अरावली जैव विविधता पार्क, गुड़गांव) गुड़गांव, हरियाणा, भारत में गुरु द्रोणाचार्य मेट्रो स्टेशन के पास 153.7 हेक्टेयर में फैला हुआ है। पार्क में पारिस्थितिक रूप से बहाल और अर्ध शुष्क भूमि वनस्पति शामिल है। पार्क को विश्व पर्यावरण दिवस, 5 जून 2010 को जनता के लिए खोला गया था। [1] पार्क में कई ट्रेल्स और एक देशी पौधे की नर्सरी और प्रवेश द्वार पर व्याख्यात्मक प्रदर्शन शामिल हैं। पार्क को 4 फरवरी 2021 को पर्यावरण मंत्री श्री भूपेंद्र यादव के देश में पहले ओईसीएम साइट के रूप में घोषित किया गया था।



[2] अप्रैल 2021 में, गुरुग्राम के नगर निगम ने 10 साल के लिए पार्क को बनाए रखने के लिए हीरो मोटोकॉर्प लिमिटेड के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। पार्क की प्राकृतिक वनस्पति उत्तरी उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन ( एनोजिसस पेंडुला और बोसवेलिया वन edaphic उप-प्रकार सहित) और चैंपियन और सेठ द्वारा मान्यता प्राप्त उत्तरी उष्णकटिबंधीय कांटा वन प्रकार के भीतर आती है। [3] पार्क में देशी पौधों की 300 से अधिक प्रजातियां हैं, जिनमें बड़ी संख्या में शुष्क क्षेत्र लिथोफाइट्स शामिल हैं। [4] पार्क से 185 से अधिक पक्षी प्रजातियों की सूचना मिली है, जो एक ईबर्ड हॉटस्पॉट है। [5] एक हालिया अध्ययन में पार्क का उपयोग करने वाली देशी पक्षी प्रजातियों की एक विस्तृत विविधता पाई गई, पारिस्थितिक रूप से बहाल क्षेत्रों में खरपतवार वाले क्षेत्रों की तुलना में पक्षियों की उच्च मुठभेड़ दर दिखाई दी। [6] बंगाल मॉनिटर जैसे सरीसृप और उत्तरी या पांच-धारीदार ताड़ की गिलहरी, नीलगाय, सुनहरी सियार, भारतीय खरगोश, आम पाम सिवेट और भारतीय ग्रे नेवला जैसे स्तनधारी पार्क में पाए जाते हैं। [7]

## परिणाम

जिस स्थान पर अरावली जैव विविधता पार्क, गुड़गांव स्थित है, वहां 1980 और 1990 के दशक के दौरान कई खनन गड्ढे संचालित थे, और आठ सक्रिय क्रशर के साथ एक स्टोन क्रशिंग क्षेत्र भी था। 2002 में सुप्रीम कोर्ट के प्रतिबंध के बाद खनन और स्टोन क्रशिंग रुक गया, जो 2009 से ही लागू था। खनन गतिविधियों और अन्य गड़बड़ी के परिणामस्वरूप बंजर पहाड़ी ढलान, गहरे पानी की मेज और खराब मिट्टी का आवरण था। साइट पर बचे हुए जंगलों का अत्यधिक क्षरण हुआ और प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा (स्थानीय रूप से विलायती कीकर या बावलिया के रूप में जाना जाता है) द्वारा आक्रमण किया गया। [4]



Peacocks in Aravalli biodiversity park

2010 में, संबंधित और भावुक नागरिकों के एक समूह को 'आयमगुड़गांव' कहा जाता है, [7] जिसमें लतिका ठुकराल, [8] स्वानजल काक कपूर, अटल कपूर, गायत्री सिंह और दिवंगत अटल कपूर शामिल थे, जिन्होंने अरावली की पारिस्थितिक बहाली की पहल की। जैव विविधता पार्क, गुड़गांव। उन्होंने 2011 में क्षतिग्रस्त परिदृश्य को बहाल करने के लिए पारिस्थितिक बहाली व्यवसायी विजय धस्माना [9] को काम पर रखा। इसके बाद क्षेत्र की मूल अरावली वन वनस्पति को वापस लाने के लिए दृष्टि को संशोधित किया गया। अरावली रेंज में मांगर, नाहरगढ़ और कुम्भलगढ़ में बचे हुए प्राकृतिक जंगलों और वनस्पति क्षेत्रों से एकत्र किए गए बीजों से लगभग 200 देशी पौधों की प्रजातियों के पौधे उगाए गए। प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा जैसी आक्रामक विदेशी प्रजातियों को सावधानीपूर्वक हटा दिया गया और अरावली रेंज के देशी पौधों को लगाया गया। इनमें बोसवेलिया सेराटा (स्थानीय नाम: सलाई), स्टरकुलिया यूरेन्स (कुल्लू), एनोजिसस पेंडुला (धौ)



, होलारहेना पबसेंस ( इंद्रजाओ ), मित्राग्याना परविफोलिया ( काइम ), राइटिया टिकटोरिया ( खिरनी ), कमिफोरा वाइटी ( गुगुल ) जैसी देशी प्रजातियां शामिल हैं।, हेलिक्टेरिस आइसोरा (मारोदफली), अल्बिज़िया ओडोरोटिसिमा ( काला बसा ), मल्लोटस फिलिपेंसिस ( सिंदूरी ) और कई अन्य। लगाए गए पौधों के एक बड़े हिस्से को ड्रिप सिंचाई के माध्यम से सींचा गया था। पार्क एक पुराने खदान स्थल के पास घास के मैदानों और एक मौसमी तालाब सहित कई प्रकार के निवास स्थान भी रखता है। [4]

देशी पौधों की नर्सरी का प्रबंधन Iamgurgaon द्वारा किया जाता है, जो एक स्थानीय गैर-लाभकारी संस्था है, जो गुड़गांव नगर निगम के साथ पार्क का प्रबंधन करती है। अरण्य और वनजा नाम की नर्सरी क्रमशः 2011 और 2012 में बनाई गई थीं। हर साल मानसून के दौरान पार्क क्षेत्र की पारिस्थितिक बहाली के लिए पौधों को लगाया जाता है। पार्क में 160 से अधिक देशी पौधों की प्रजातियों को उगाया और लगाया गया है। [4] अक्टूबर 2018 में, प्रस्तावित 6 लेन राजमार्ग के कारण पार्क सुर्खियों में आया, जो पार्क के माध्यम से चलेगा। विभिन्न नागरिक समूहों के साथ-साथ गुरुग्राम के निवासी पार्क के संरक्षण और राजमार्ग के निर्माण को रोकने के समर्थन में खड़े हुए। [10] [11]

पार्क में औषधीय महत्व की 240 से अधिक पौधों की प्रजातियां हैं। कुछ उल्लेखनीय प्रजातियां हैं अस्थमा बेल, ब्राह्मी, गुगल, दर्दपात, रुद्राक्ष, हड़जोड़, वन तुलसी, रक्त मदार, निर्गुंडी आदि एक छोटे से खनन गड्ढे को छायादार पेड़ और पर्वतारोही उगाकर ऑर्किडेरियम में बदल दिया गया है। कंजर्वेटरी में उगाए जाने वाले कुछ महत्वपूर्ण ऑर्किड हैं थुनिया अल्बा, वांडा क्रिस्टाटा, एराइड्स मल्टीफ्लोरा, एकैम्पे प्रेमोर्सा, और कोइलोगिन क्रिस्टाटा। छात्रों के बीच संरक्षण शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए ऑर्किडेरियम का उपयोग किया जाता है। अधिक रोमांच लोग हजारों चमगादड़ों को शरण देने वाली एक संकरी गुफा तक जा सकते हैं। हालांकि रोशनी या शोर मचाकर उन्हें परेशान करना सख्त वर्जित है। छोटे खनन गड्ढों को ऑर्किडेरियम के समान पैटर्न पर फ़र्नरी में विकसित किया गया है, फ़र्न के संरक्षण के लिए जैसे कि पर्टिस पेलुसीडा, पॉलीस्टीचम एसपी, एक्टिनियोप्टेरिस रेडियाटा, मार्सिलिया मिनुटा, पर्तिडियम एस्कुलेंटम आदि फ़र्न बहुत प्राचीन समूह हैं। बिना फूल वाले पौधे। ऑर्किड और फ़र्न कंजर्वेटरी अद्वितीय हैं और केवल दिल्ली में एबीपी में पाए जाते हैं। [8]



### Indian Pitta in Aravalli Biodiversity Park

तितलियाँ और पतंगे परागण सेवाएँ प्रदान करते हैं जो फल और बीज पैदा करने के लिए बाग बनाते हैं, फल, सब्जियाँ, बीज और अनाज पैदा करने के लिए फसलें, और बीज पैदा करने के लिए वन पौधे बनाते हैं। दिल्ली में पंखों वाली सुंदरियों को वापस लाने के लिए, तितलियों के मेजबान पौधों की 100 से अधिक प्रजातियों को लगाकर तितलियों की संरक्षिका बनाई गई है। कंजर्वेटरी में तितलियों और पतंगों की 100 से अधिक प्रजातियाँ हैं। उल्लेखनीय प्रजातियाँ रेड पियरोट, पैसी, टाइगर्स, ग्रास ज्वेल, माइग्रेंट्स, कॉमन रोज़, स्पॉट स्वॉर्डटेल, ब्लूज़, टाइगर मोथ्स, स्किपर्स, स्विफ्ट्स आदि, अरावली पर्वतमाला के 10 अलग-अलग देशी पेड़ों का टी कंजर्वेटरी विज़िटर ज़ोन में विकसित किया गया है। वृक्षों की प्रजातियाँ हैं बोसवेलिया सेराटा, स्टेरकुलिया यूरेन्स, लैनिया कोरोमेडेलिका, प्रोसोपिस सिनेरेरिया, एनोजिसस सेरेसिया, टेरोकार्पस, बुटिया मोनोस्पर्मा आदि।

एबीपी में घास के मैदानों, झाड़ीदार भूमि, उष्णकटिबंधीय कंटीले जंगलों से लेकर चौड़ी पत्ती वाले पर्णपाती जंगलों तक के पौधों की एक विस्तृत श्रृंखला है। अरावली की मूल निवासी लगभग 1000 प्रजातियों को पारिस्थितिक रूप से 35 समुदायों में इकट्ठा किया गया है जो कई कीड़ों, उभयचरों, पक्षियों, सरीसृपों और स्तनधारियों के लिए घर बन गए हैं। [9] कुछ समुदाय इस प्रकार हैं: (i) अदीना - मित्राग्याना, (ii) टर्मिनेलिया टोमेंटोसा - होलोप्टेलिया, (iii) एनोजिसस - बुटिया, (iv) बबूल - बालनाइट्स, (v) राइटिया - होलारेना, (vi) स्टेरकुलिया - बोसवेलिया, (vii) ग्रेविया - कैरिसा, (viii) रस - लिशियम, और (ix) सेन्क्रस - हेटेरोपोगोन और अन्य। कई जंगली फल देने वाली झाड़ियाँ जैसे कि कैरिसा कारेंडेंस, एहेशिया लाविस, कॉर्डिया घाराफ, जिज़िफ़स एसपी, फ़िकस एसपी। विभिन्न वन्य समुदायों के सहयोग से विभिन्न पशु प्रजातियों के लिए आवास प्रदान करने के लिए लगाए गए थे।



### Snakegourd in Aravalli Biodiversity Park

## निष्कर्ष

वसंत विहार के उत्तर-पश्चिम में स्थित 699 एकड़ भूमि पर अरावली जैव विविधता पार्क (एबीपी) विकसित किया जा रहा है। पिछले खनन और प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा (विलायती कीकर) से प्रभावित होने के कारण यह क्षेत्र अत्यधिक निम्नीकृत है। दिल्ली की जैव विविधता लगभग विलुप्त हो चुकी है। ABP का मुख्य उद्देश्य दिल्ली अरावली की खोई हुई जैव विविधता को वापस लाना है। एबीपी का अन्य उद्देश्य छात्रों के बीच प्रकृति शिक्षा को बढ़ावा देना और जनता के बीच पर्यावरण जागरूकता पैदा करना है। मेडिसिनल गार्डन अरावली से औषधीय पौधों के अत्यधिक दोहन से औषधीय महत्व वाली कई प्रजातियों का स्थानीय विलुप्त होने का कारण बना है। एबीपी न केवल संकटग्रस्त औषधीय पौधों का संरक्षण कर रहा है बल्कि उनकी संख्या में वृद्धि भी कर रहा है। स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में पौधों के महत्व पर संरक्षण, शिक्षा और जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए औषधीय पादप संरक्षिका का भी उपयोग किया जाता है। अरावली बायोडायवर्सिटी पार्क अरावली की प्राकृतिक विरासत को आश्रय देने वाले अपने अनूठे और सुंदर लहरदार परिदृश्य के साथ प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग है। पार्क में घने पुनर्निर्मित वन समुदायों, घास के मैदानों और मौसमी जल निकायों से गुजरने वाली प्रकृति की पगडंडियों का नेटवर्क है। अरावली जैव विविधता पार्क में प्रकृति शिक्षा में प्रकृति और इसके संरक्षण के लिए प्यार पैदा करने वाली गतिविधियाँ शामिल हैं लोगों के बीच, खासकर युवा पीढ़ी। जैव विविधता और इसके लाभों पर ध्यान केंद्रित करते हुए प्रकृति संरक्षण के संदेश को फैलाने के लिए कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं यदि आपके पास है। सभी गतिविधियों का प्राथमिक जोर करके सीख रहा है। पार्क सभी प्रकृति प्रेमियों और उन सभी को प्रोत्साहित करता है जो प्रकृति को देखने और उससे सीखने में रुचि रखते हैं। यह प्रयास एक प्रयास है "प्रकृति से कैसे सीखें"। अरावली जैव विविधता पार्क दिल्ली में एकमात्र स्थान है जो स्कूली बच्चों को प्राकृतिक वातावरण में पर्यावरण शिक्षा प्रदान करने के लिए अद्वितीय शिविर सुविधाएं प्रदान करता है। इस पार्क की स्थापना के बाद से दिल्ली के एनसीटी के कई स्कूल और कॉलेज इस सुविधा का लाभ उठा रहे हैं। पार्क के वैज्ञानिक और प्रकृति शिक्षा कर्मचारी छात्रों के साथ बातचीत करते हैं और प्रकृति के साथ उनके पहले संपर्क को उजागर करते हैं, जिससे आजीवन रुचि शुरू हो सकती है। यह संरक्षण शिक्षा का केंद्र है। [10,11]

## संदर्भ

1. "अरावली जैव विविधता पार्क - मैं गुड़गांव हूँ" | iamgurgaon.org | 27 जुलाई 2017 को पुनःप्राप्त ।
2. ^ hindustantimes.com <https://www.hindustantimes.com/cities/gurugram-news/aravalli-biodiversity-park-in-gurugram-declared-as-india-s-first-oecm-site-101643834401345.html> | 2 फरवरी 2022 को पुनःप्राप्त । {{cite web}}: लापता या खाली |title=( मदद )
3. ↑ चैंपियन, हैरी जी.; सेठ, एसके (1968)। भारत के वन प्रकारों का एक संशोधित सर्वेक्षण। नई दिल्ली: प्रकाशन प्रबंधक, भारत सरकार।
4. ^ ए बी सी डी धस्माना, विजय। 2016. हीलिंग टच: अरावली जैव विविधता पार्क, गुड़गांव। लैंडस्केप आर्किटेक्चर जर्नल 49 : 18-25।
5. ^ ebird. "ईबर्ड - अरावली जैव विविधता पार्क, गुड़गांव" । ईबर्ड । 27 जुलाई 2017 को पुनःप्राप्त ।
6. ^ बंसल, मिशा। 2017. अरावली जैव विविधता पार्क, गुरुग्राम के पक्षी समुदाय पर पारिस्थितिक बहाली के प्रभाव का मूल्यांकन। एम.एससी. निबंध, स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।





7. ^ "आयमगुड़गांव - एक साथ काम करें। एक अंतर बनाएं" । 18 अप्रैल 2020 को पुनःप्राप्त ।
8. ^ "शहर को हरा-भरा बनाना, एक समय में एक लाख पेड़" । हिंदुस्तान टाइम्स । 9 मार्च 2019 । 18 अप्रैल 2020 को पुनःप्राप्त ।
9. ^ <https://therewilders.in> । 27 नवंबर 2022 को पुनःप्राप्त । `{{cite web}}`: लापता या खाली |title=( मदद )
10. ^ "अरावली जैव विविधता पार्क में एनएचएआई की सड़क योजना का विरोध करने के लिए हजारों लोग इकट्ठा हुए" ।
11. ^ "नागरिकों ने अरावली जैव विविधता पार्क के माध्यम से नियोजित सड़क का विरोध किया" ।



**INNO SPACE**  
SJIF Scientific Journal Impact Factor  
**Impact Factor: 8.118**



**ISSN** INTERNATIONAL  
STANDARD  
SERIAL  
NUMBER  
INDIA



# INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

 **9940 572 462**  **6381 907 438**  **ijirset@gmail.com**



[www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Scan to save the contact details